ऑलपोर्ट का विशेषक उपागम (Allport's Trait Approach)

ऑलपोर्ट के अनुसार विशेषक या व्यक्तित्व गुण हमारे व्यक्तित्व की वे आधारभूत इकाइयाँ (Basic Units) हैं जिनसे हमारे व्यक्तित्व का निर्माण होता है। ऑलपोर्ट ने व्यक्तित्व वर्णन के लिए जिन तीन प्रकार के गुणों या विशेषकों को हमारे सामने रखा है उनके नाम हैं—(i) प्रधान विशेषक (Cardinal Traits), (ii) केंद्रीय विशेषक (Central Traits), (iii) गौण विशेषक (Secondary Traits)। कार्डीनल या प्रधान विशेषक (Cardinal Traits) ही व्यक्ति के व्यक्तित्व में सबसे प्रमुख रूप से क्रियाशील पाये जाते हैं। व्यक्तित्व को तथा व्यवहार को अपने ही रंग में रंगकर एक निश्चित दिशा देने का काम इन्हीं का होता है। ये संख्या में लगभग एक या दो ही होते हैं। किसी के व्यक्तित्व में इनका पाया जाना भी अनिवार्य नहीं होता। कुछ व्यक्ति ऐसे ही हो सकते हैं जिनके व्यक्तित्व में इस प्रकार के पूरी तरह छा जाने वाले ये एक-दो व्यक्तित्व गुण (Cardinal traits) हो ही नहीं। प्रधान विशेषकों के उदाहरण के रूप में मजाकिया या हँसोड़पन (Sense of Humour) को लेकर चलते हैं। जिस व्यक्ति के व्यक्तित्व में यह गुण प्रधान विशेषक (Cardinal Traits) के रूप में उपस्थित होता है। वह व्यक्ति अपने इसी गुण के कारण बहुचर्चित रहता है। सभी अवसरों पर (चाहे उचित हो या अशोभनीय) उसे हँसी या मज़ाक ही सूझता रहता है और उसका व्यक्तित्व उसके इसी व्यक्तित्व गुण या विशेषक का पर्याय बनकर रह जाता है।

केंद्रीय विशेषक (Central Traits) व्यक्ति संबंधी उन कुछ विशेष व्यक्तित्व गुणों या विशेषकों को कहा जाता है जो प्रायः एक व्यक्ति में व्यक्तित्व का वर्णन करने तथा उसकी पहचान बनाने के काम में लाये जाते हैं; जैसे—ईमानदारी, दयालुता, सज्जनता, परोपकारिता, दबंगपन, कायरता, चाटुकारिता, कामुकता आदि। प्रायः किसी

Scanned with CamScanner

व्यक्ति के व्यक्तित्व को जानने तथा उसकी पहचान कायम करने के लिए इस प्रकार के 8–10 व्यक्तित्व गुणों या विशेषकों की आवश्यकता हुआ करती है।

सैकेंडरी या गौण विशेषक (Secondary Traits) व्यक्ति के व्यक्तित्व का वह भाग है जिसके होने या न होने का कोई विशेष प्रभाव उसके व्यक्तित्व की पहचान या छाप पर नहीं पड़ता। गौण नाम के अनुरूप ही इनका एक तरह से व्यक्तित्व वर्णन की दृष्टि से महत्त्व भी गौण ही होता है। व्यवहार में इन गुणों तथा विशेषताओं की झलक भी यदा-कदा ही देखने को मिलती है और इन्हें किसी के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग नहीं माना जा सकता; जैसे—कोई स्वार्थी, कंजूस तथा लालची प्रवृत्ति का होते हुए यदा-कदा किसी कारणवश चंदा देते हुए या परोपकार करते हुए देख लिया जाए।

ऑलपोर्ट के अनुसार, व्यक्ति के व्यक्तित्व को जानने, समझने तथा उसका वर्णन कर एक अलग पहचान बनाने में इस तरह मुख्य भूमिका प्रधान विशेषकों (Cardinal Traits) तथा कुछ चुने हुए केंद्रीय विशेषकों (Central Traits) की ही होती है। शेष केंद्रीय विशेषक गौण विशेषकों के साथ मिलकर ऐसी विशेषताओं तथा व्यक्तित्व गुणों का निर्माण कर सकते हैं जिनकी उपस्थिति सामान्यतया बहुत-से व्यक्तियों में पायी जाती है। ऐसे सभी व्यक्तित्व गुणों को सामान्य विशेषकों (Commen Traits) का नाम दिया जा सकता है। अतः किसी के व्यक्तित्व की पहचान तथा उसे जानने-समझने हेतु हमें उसके व्यक्तित्व में निहित पहले दो प्रकार के व्यक्तित्व गुणों (Traits), कार्डीनल तथा केंद्रीय विशेषकों पर ही अधिक ध्यान केंद्रित करने का प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि ये ही गुण या विशेषक किसी के व्यक्तित्व को विशेष या अद्वितीय बनाते हैं।

व्यक्तित्व के वर्णन हेतु कितने व्यक्तित्व गुण या विशेषकों की आवश्यकता है यह निश्चित करने के लिए ऑलपोर्ट ने अपने एक सहयोगी ऑडबर्ट (Odbert) के साथ मिलकर शब्दकोशों में से व्यक्तित्व गुणों को प्रकट करने वाले 17,953 शब्दों का विश्लेषण किया तथा उनमें से समानार्थी तथा कुछ कम उपयोगी शब्दों को निकालकर ऐसे 4,541 शब्दों का चयन किया जिनके द्वारा व्यक्तित्व तथा व्यवहार का ठीक प्रकार वर्णन किया जा सके।

इस तरह ऑलपोर्ट ने व्यक्तित्व गुणों या विशेषकों के माध्यम से व्यक्तित्व को जानने तथा समझने का एक नवीन उपागम विकसित करने की शुरुआत की जिसे आगे चलकर कैटेल जैसे मनोवैज्ञानिकों ने पूर्ण वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।

Scanned with CamScanner